

सूरह आदियात^[1] - 100

سُورَةُ الْعَادِيَّاتِ

सूरह आदियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((आदियात)) अर्थात् दौड़ने वाले घोड़ों की शपथ ली गई है। इस लिये इस का नाम “सूरह आदियात” रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में घोड़ों को इस बात की गवाही के लिये प्रस्तुत किया गया है कि मनुष्य अपने पालनहार की प्रदान की हुई शक्तियों का कितना ग़लत प्रयोग करता है।
- आयत 6 से 8 तक में मनुष्य की धन के मोह में अल्लाह का उपकार न मानने पर निन्दा की गई है।
- अन्तिम दो आयतों में उसे सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन उसे कब्रों से निकल कर अल्लाह के पास उपस्थित होना है। उस दिन उस के दिल की दशा खुल कर सामने आ जायेगी कि उस नें संसार में जो भी कर्म किये हैं वह किस भावना और विचार से किये हैं जिसे उस ने अपने दिल में छुपा रखा था।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. उन घोड़ों की शपथ जो दौड़ कर
हाँफ जाते हैं!
2. फिर पत्थरों पर टाप मार कर
चिंगारियाँ निकालने वालों की शपथ!
3. फिर प्रातः काल में धावा बोलने वालों
की शपथ!
4. जो धूल उड़ाते हैं।

وَالْعِدْبِيتِ ضَبْحًا

فَالْمُورِيَّتِ قَدْحًا

فَالْغَيْرِيتِ ضَبْحًا

فَأَثَرُنَ بِهِ نَقْعًا

1 इस सूरह में वर्णित विषय बता रहे हैं कि यह आरंभिक मक्की सूरतों में से है।

- | | |
|--|--|
| 5. फिर सेना के बीच घुस जाते हैं। | فَوَسَّطْنَ بِهِ جَمْعًا ۝ |
| 6. वास्तव में इन्सान अपने पालनहार का बड़ा कृतघ्न (नाशुकरा) है। | إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝ |
| 7. निश्चय रूप से वह इस पर स्वयं साक्षी (गवाह) है। ^[1] | وَرَأَاهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَّيمٌ ۝ |
| 8. वह धन का बड़ा प्रेमी है। ^[2] | وَرَأَاهُ حُبِّ الْغَيْرِ لَشَّدِيدٌ ۝ |
| 9. क्या वह उस समय को नहीं जानता जब कब्रों में जो कुछ है निकाल लिया जायेगा? | أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝ |
| 10. और सीनों के भेद प्रकाश में लाये जायेंगे। ^[3] | وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۝ |
| 11. निश्चय उनका पालनहार उस दिन उन से पूर्ण रूप सूचित होगा। ^[4] | إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ خَبِيرٌ ۝ |

- 1 (1-7) इन आरंभिक आयतों में मानव जाति (इन्सान) की कृतघ्नता का वर्णन किया गया है। जिस की भूमिका के रूप में एक पशु की कृतज्ञता को शपथ स्वरूप उदाहरण के लिये प्रस्तुत किया गया है। जिसे इन्सान पोसता है, और वह अपने स्वामी का इतना भक्त होता है कि उसे अपने ऊपर सवार कर के नीचे ऊँचे मार्गों पर रात दिन की परवाह किये बिना दोड़ता और अपनी जान जोखिम में डाल देता है। परन्तु इन्सान जिसे अल्लाह ने पैदा किया, समझ बूझ दी और उस के जीवन यापन के सभी साधन बनाये, वह उस का उपकार नहीं मानता और जान बूझ कर उस की अवज्ञा करता है, उसे इस पशु से शिक्षा लेनी चाहिये।
- 2 इस आयत में उस की कृतघ्नता का कारण बताया गया है कि जिस इन्सान को सर्वाधिक प्रेम अल्लाह से होना चाहिये वही अत्याधिक प्रेम धन से करता है।
- 3 (9-10) इन आयतों में सावधान किया गया है कि संसारिक जीवन के पश्चात एक दूसरा जीवन भी है तथा उस में अल्लाह के सामने अपने कर्मों का उत्तर देना है जो प्रत्येक के कर्मों का ही नहीं उन के सीनों के भेदों को भी प्रकाश ला कर दिखा देगा कि किस ने अपने धन तथा बल का कुप्रयोग कर कृतघ्नता की है, और किस ने कृतज्ञता की है। और प्रत्येक को उस का प्रतिकार भी देगा। अतः इन्सान को धन के मोह में अन्धा तथा अल्लाह का कृतघ्न नहीं होना चाहिये, और उस के सत्धर्म का पालन करना चाहिये।
- 4 (11) अर्थात् वह सूचित होगा कि कौन क्या है, और किस प्रतिकार का भागी है।